RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

औपनिवेशिकता और देहात



अध्याय-9 | भाग-3

21 अगस्त 2026 || 04:00 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जमीदारों का प्रतिरोध

माता
बहन
पत्नी



फर्जी
खरीदार
बर्दवान राजा

लठैत

1. 2 cr. ×
2. 2 cr ×
3, 4, 5, 6 7
8 सस्ती दर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दिनाजपुर के जोतदार

बुकानन ने बताया है कि उत्तरी बंगाल के दिनाजपुर जिले के जोतदार किस प्रकार ज़मींदार के अनुशासन का प्रतिरोध और उसकी शक्ति की अवहेलना किया करते थे :

> भूस्वामी इस वर्ग के लोगों को पसंद नहीं करते थे, लेकिन यह स्पष्ट है कि इन लोगों का होना बहुत ज़रूरी था क्योंकि इनके बिना, ज़रूरतमंद काश्तकारों को पैसा उधार कौन देता...
>
> *जोतदार*, जो बड़ी-बड़ी ज़मीनें जोतते हैं, बहुत ही हठीले और ज़िद्दी हैं और यह जानते हैं कि ज़मींदारों का उन पर कोई वश नहीं चलता। वे तो अपने राजस्व के रूप में कुछ थोड़े से रुपये ही दे देते हैं और लगभग हर किस्त में कुछ-न-कुछ बक़ाया रक़म रह जाती है। उनके पास उनके पट्टे की हकदारी से ज़्यादा ज़मीनें हैं। ज़मींदार की रक़म के कारण, अगर अधिकारी उन्हें कचहरी में बुलाते थे और उन्हें डराने-धमकाने के लिए घंटे-दो-घंटे कचहरी में रोक लेते हैं तो वे तुरंत उनकी शिकायत करने के लिए फ़ौजदारी थाना (पुलिस थाना) या मुन्सिफ़ की कचहरी में पहुँच जाते हैं और कहते हैं कि ज़मींदार के कारिंदों ने उनका अपमान किया है। इस प्रकार राजस्व की बक़ाया रक़मों के मामलें बढ़ते जाते हैं और जोतदार छोटे-छोटे रैयत को राजस्व न देने के लिए भड़काते रहते हैं...

➲ यह बताइए कि *जोतदार* ज़मींदारों की सत्ता का किस प्रकार प्रतिरोध किया करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पहाड़िया

बुकानन कौन था?

फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था जो भारत आया और बंगाल चिकित्सा सेवा में (1794 से 1815 तक) कार्य किया। कुछ वर्षों तक, वह भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़्ली का शल्य-चिकित्सक रहा। कलकत्ता (वर्तमान में कोलकत्ता) के अपने प्रवास के दौरान उसने कलकत्ता में एक चिड़ियाघर की स्थापना की, जो कलकत्ता अलीपुर चिड़ियाघर कहलाया। वे थोड़े समय के लिए वानस्पतिक उद्यान के प्रभारी रहे। बंगाल सरकार के अनुरोध पर उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार क्षेत्र में आने वाली भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण किया। 1815 में वह बीमार हो गए और इंग्लैण्ड चले गए। अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् वे उनकी जायदाद के वारिस बने और उन्होंने उनके वंश के नाम 'हैमितटन' को अपना लिया। इसलिए उन्हें अकसर बुकानन-हैमितटन भी कहा जाता है।


ब्रिटेन
ई.आई.सी
व्यापार
भारत
P
संसद
इकाधिकार
राजनीतिक
किसान
आरोप
कर
मृत्यु
रिपोर्ट
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

परिवर्तन ⟶ रिपोर्ट ⟶ 1813
संसद प्रस्तुत

भारत
बंगाल
जिले

— पाचवी रिपोर्ट

- कलेक्टरों की रिपोर्ट
- राजस्व संबंधित तालिकाएं
- जमींदार रैयत अर्जियां
- प्रशासन की टिप्पणियां

पाँचवी रिपोर्ट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पाँचवीं रिपोर्ट से उद्धृत

ज़मींदारों की हालत और ज़मीनों की नीलामी के बारे में पाँचवीं रिपोर्ट में कहा गया है :

राजस्व समय पर नहीं वसूल किया जाता था और काफ़ी हद तक ज़मीनें समय-समय पर नीलामी पर बेचने के लिए रखी जाती थीं। स्थानीय वर्ष 1203, तदनुसार सन् 1796-97 में बिक्री के लिए विज्ञापित ज़मीन की निर्धारित राशि (जुम्मा) 28,70,061 सिक्का रु. थी और वह वास्तव में 17,90,416 रु. में बेची गई और 14,18,756 रु. की राशि जुम्मा के रूप में प्राप्त हुई। स्थानीय संवत 1204, तदनुसार सन् 1797-98 में 26,66,191 सिक्का रु. के लिए ज़मीन विज्ञापित की गई, 22,74,076 सिक्का रु० की ज़मीन बेची गई और क्रय राशि 21,47,580 सिक्का रु. थी। बाक़ीदारों में कुछ लोग देश के बहुत पुराने परिवारों में से थे। ये थे : नदिया, राजशाही, विशनपुर (सभी बंगाल के ज़िले) आदि के राजा...। साल दर साल उनकी जागीरों के टूटते जाने से उनकी हालत बिगड़ गई। उन्हें ग़रीबी और बरबादी का सामना करना पड़ा और कुछ मामलों में तो सार्वजनिक निर्धारण की राशि को यथावत बनाए रखने के लिए राजस्व अधिकारियों को भी काफ़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

➲ जिस लहज़े में साक्ष्य अभिलिखित किया गया है, उससे आप रिपोर्ट में वर्णित तथ्यों के प्रति रिपोर्ट लिखने वाले के रुख़ के बारे में क्या सोचते हैं? आंकड़ों के ज़रिये रिपोर्ट में क्या दर्शाने की कोशिश की गई है? क्या इन दो वर्षों के आंकड़ों से आपके विचार से, किसी भी समस्या के बारे में दीर्घकालीन निष्कर्ष निकालना संभव होगा?

Q. पांचवी रिपोर्ट के बारे में बताइए ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



फ्रांसिस बुकानन

बड़ी खतरनाक जगह !

बंगाल
(गीली जमीन)
(स्थायी कृषि)

राजमहल पहाड़ियां
(सूखी जमीन)
(सम कृषि)

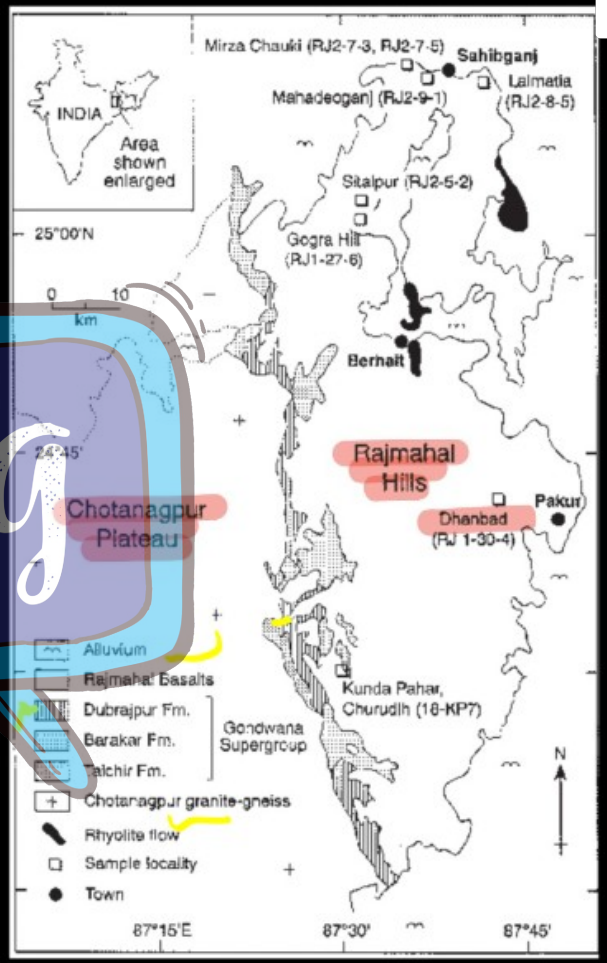

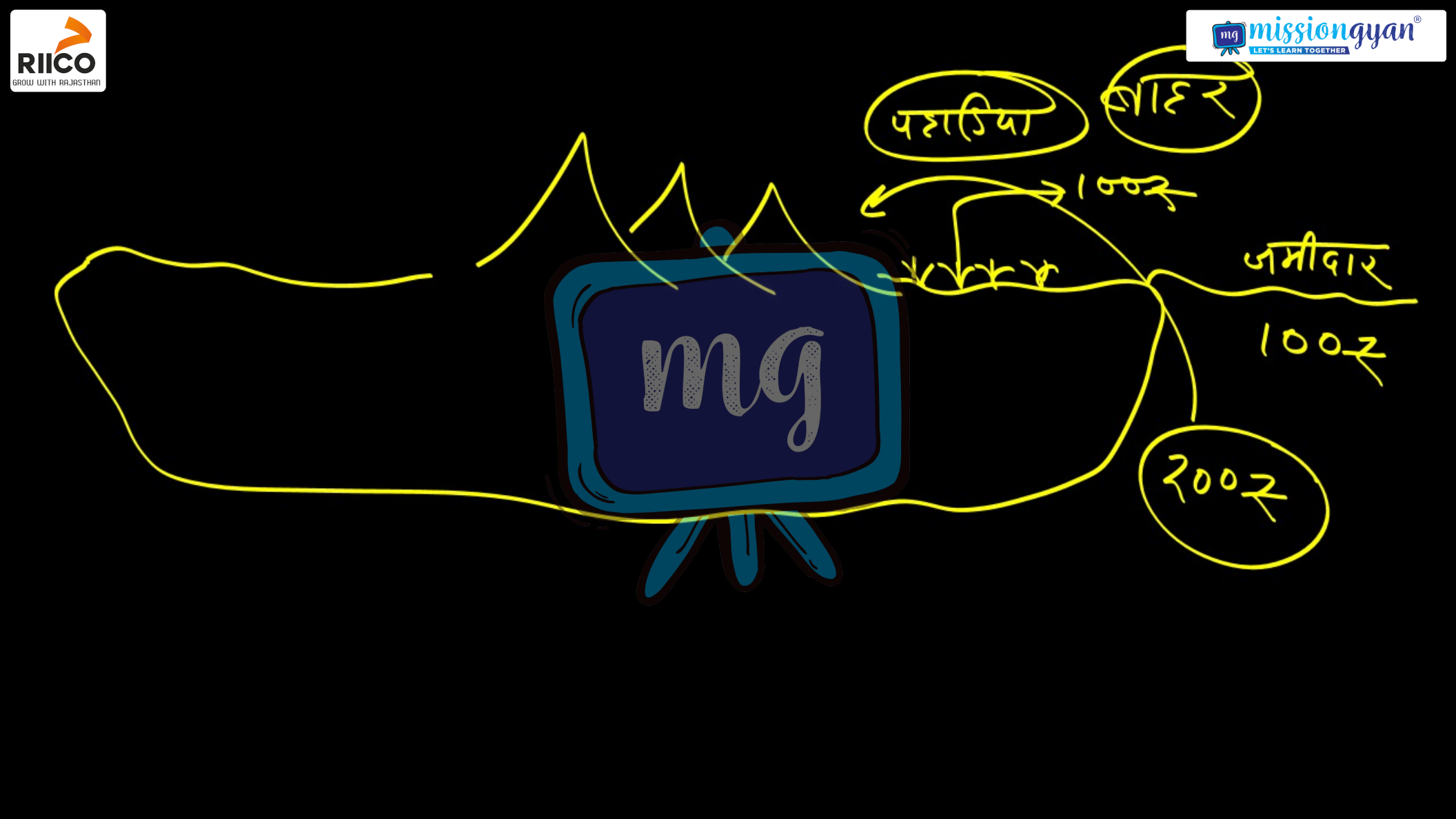
पहाड़िया
100₹
जमींदार
100₹
200₹

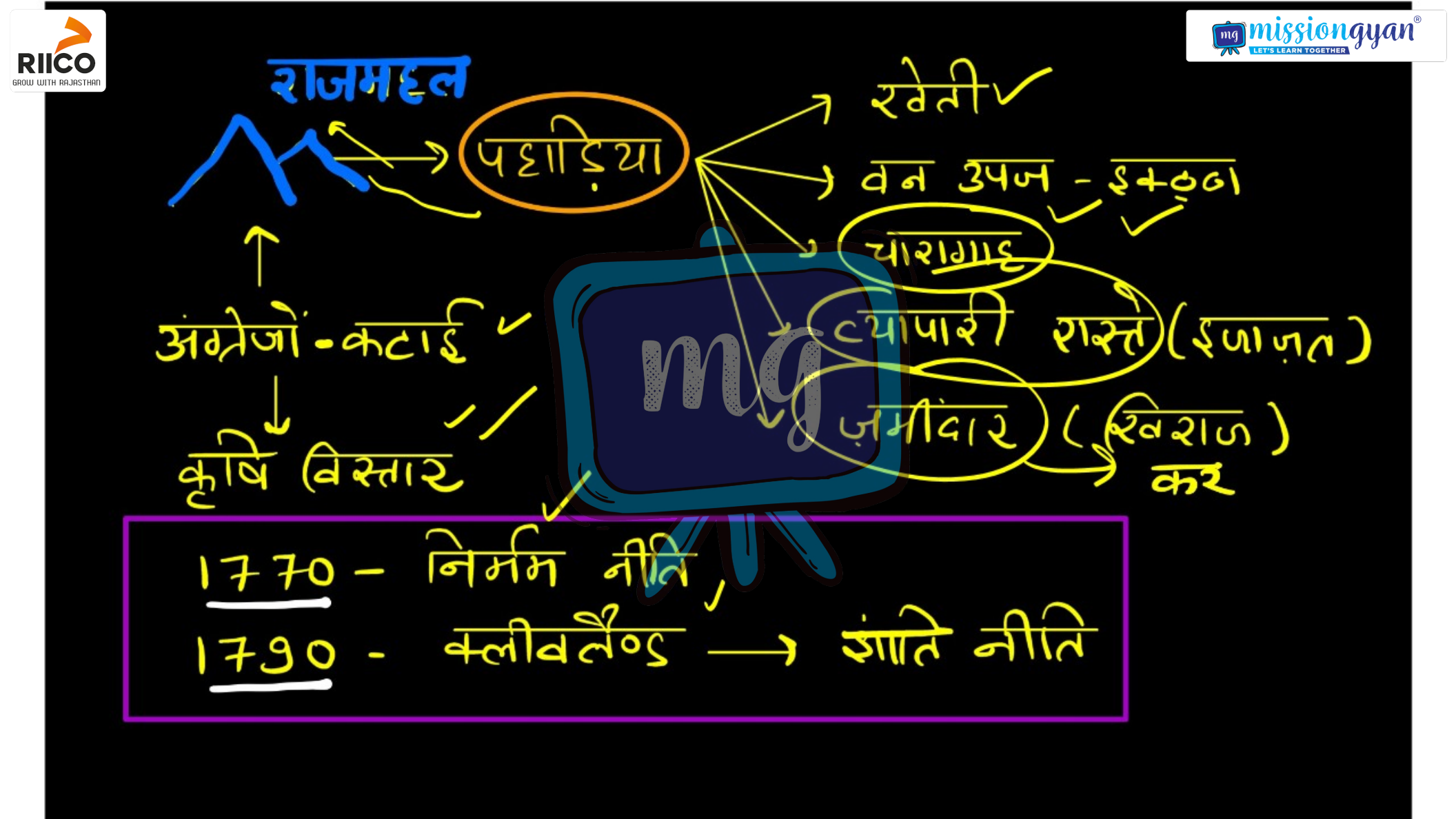
राजमहल
पहाड़िया
खेती
वन उपज - झूम
चारागाह
व्यापारी रास्ते (इजाज़त)
ज़मींदार (स्वराज)
कर
अंग्रेजों - कटाई
कृषि विस्तार
1770 - निर्मम नीति
1790 - क्लीवलैण्ड → शांति नीति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शांति नीति → मुखिया - भत्ता

↓

चाल - चलन ठीक रखो

परिवर्तन

No

जंगल → सफाई : संघाल

→ पहाड़िया

→ संघाल



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1780- संथाल बंगाल आगमन

ब्रिटिश

संथाल ✓ → आदर्श कृषक

पहाड़ियों ✗ → काबू में नहीं

1832 -

दामिन इ कोह → संथालों की भूमि घोषित

संथालों के गांवों को बढ़ोतरी

संथाल भी परेशान??

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साहूकार → ब्याज → संथाल ← राजस्व सरकार

(दिक्)

1855 - संथाल विद्रोह

100 रु

2000 रु

परगनी

(भागलपुर + बीरभूम)

→ विशेष कानून







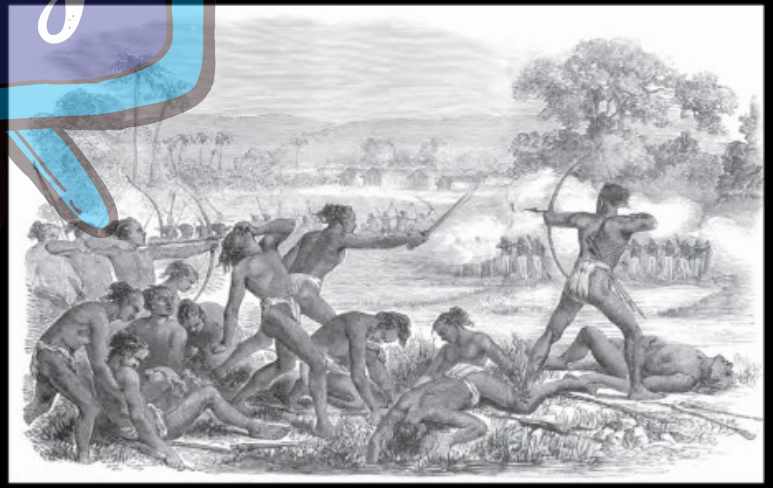

सिधू मांसी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

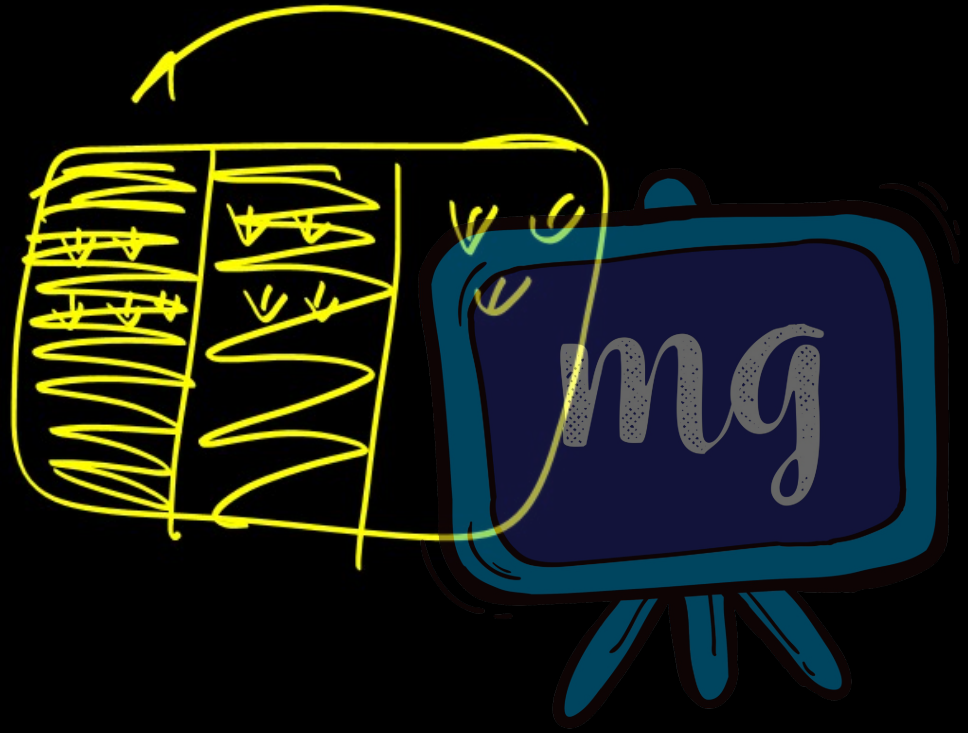

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पहाड़िया

2. कुदाल और हल

संथाल

कुदाल : पहाड़िया लोगों के जीवन का प्रतीक

हल : नए बाशिंदों (संथाल) की शक्ति का प्रतीक

- राजमहल की पहाड़िया → झारखण्ड
- ↓
- यहां पहाड़िया लोग रहते थे।
- ↓
- झूम खेती करते थे।
  - रेशम कोया
  - लकड़ी - काठकोयला, चारगाह
- ↓
- अंग्रेजों के द्वारा कृषि भूमि का विस्तार किया गया।
- ↓
- ज्यों - ज्यों स्थायी कृषि का विस्तार होता गया, जंगलों व चारागाहों का क्षेत्र संकुचित होता गया।

झूम खेती

पेड़-पौधों को काटकर जला दिया जाता है।

↓

उर्वर ← खेती

↳ परती छोड़ दिया जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- पहाड़ी लोगों और स्थायी खेतीहरों के बीच झगड़ा तेज होता गया।



संथाल

हल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथाल – अगुआ बाशिंदे

संथाल विद्रोह :- 1855-56

- संथाल लोग 1780 के आस-पास बंगाल में आने लगे थे।
- संथाल मुख्यत: कृषक थे।
- जमींदार लोगों ने नयी कृषि भूमि तैयार करने और कृषि क्षेत्र का विस्तार करने के लिए इन्हें आमंत्रित किया।
- 1832 तक, जमीन के एक काफी बड़े इलाके को ''दामिन-ए-कोह'' के रूप में सीमांकित कर दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथाल

बाहरी लोग।

पेसेन्ट्स

दामिन-ए-कोह – यह भागलपुर से राजमहल तक का वन क्षेत्र था।

- ब्रिटिश सरकार द्वारा दामिन-ए-कोह का निर्माण संथाल समुदाय को बसाने के लिए किया गया था।

↓

सरकार (राज्य) ने भारी कर लगाए।

↓

साहूकार (दिकू) लोग संथालों की जमीन हड़प लेते थे।

संथाल विद्रोह हुआ – 1855-56

नेता – सिधू मांझी

प्रतीक – हल





Q. 'पहाडिया'

Q. 'संयाल'

Q. कुदाल v/s हल.



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संथालों के बारे में बुकानन के विचार

नयी ज़मीनें साफ़ करने में वे बहुत होशियार होते हैं लेकिन नीचता से रहते हैं। उनकी झोपड़ियों में कोई बाड़ नहीं होता और दीवारें सीधी खड़ी की गई छोटी-छोटी सटी हुई लकड़ियों की बनी होती हैं जिन पर भीतर की ओर लेप (पलस्तर) लगा होता है। झोपड़ियाँ छोटी और मैली-कुचैली होती हैं; उनकी छत सपाट होती हैं, उनमें उभार बहुत कम होता है।

कड़ुआ के पास की चट्टान

बुकानन की पत्रिका निम्नलिखित ऐसे प्रेक्षणों से भरी पड़ी है:

आगे लगभग एक मील चलने के बाद में (मैं) चट्टानों के एक शिलाफलक पर आ गया; जिसका कोई यह एक छोटा दानेदार ग्रेनाइट है जिसमें लाल-लाल फेल्डस्पार, क्वार्ट्ज़ और काला अबरक लगा है... वहाँ से आधा मील से अधिक की दूरी पर मैं एक अन्य चट्टान पर आया वह भी स्तरहीन थी और उसमें बारीक दानों वाला ग्रेनाइट था जिसमें पीला-सा फेल्डस्पार, सफ़ेद-सा क्वार्ट्ज और काल, अबरक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वनों की बटाई और स्थायी कृषि के बारे में

निचली राजमहल की पहाड़ियों में एक गाँव से गुजरते हुए, बुकानन ने लिखा: इस प्रदेश का दृश्य बहुत ही बढ़िया है; यहाँ की खेती विशेष रूप से, घुमावदार संकरी घाटियों में धान की फ़सल, बिखरे हुए पेड़ों के साथ साफ़ की गई जमीन, और चट्टानी पहाड़ियाँ सभी अपने आप में पूर्ण हैं, कमी है तो बस इस क्षेत्र में कुछ प्रगति की और विस्तृत तथा उन्नत खेती की, जिनके लिए यह प्रदेश अत्यंत संवेदनशील है। यहाँ लकड़ी की जगह टसर और लाख के लिए आवश्यकतानुसार बड़े-बड़े बागान लगाए जा सकते हैं; बाकी जंगल को भी साफ़ किया जा सकता है, और जो भाग इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त न हो वहाँ पनई ताड़ और महुआ के पेड़ लगाए जा सकते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ऋण का स्त्रोत सूख गया

- 1865 तक अमेरिका में गृह युद्ध बंद हो गया।
- ↓
- अमेरिका में कपास का उत्पादन फिर से चालू हो गया।
- ↓
- भारतीय कपास के निर्यात में गिरावट आती चली गयी।
- ↓
- व्यापारी और साहूकारों ने कपास उत्पादकों को ऋण देने बंद कर दिये।
- ↓
- सरकार द्वारा लगान भी बढ़ा दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्याय का अनुभव

भाड़ा-पत्र

जब किसान पर ऋण का भार बहुत बढ़ गया तो वह ऋणदाता का ऋण चुकाने में असमर्थ हो गया। अब ऋणदाता के पास अपना सर्वस्व-जमीन, गाड़ियाँ, पशुधन देने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन पशुओं के बिना वह आगे खेती कैसे कर सकता था। इसलिए उसने जमीन और पशु भाड़े पर ले लिए। अब उसे उन पशुओं के लिए, जो मूल रूप से उसके अपने ही थे, भाड़ा चुकाना पड़ता था। उसे एक भाड़ा-पत्र (किरायानामा) लिखना पड़ता था जिसमें यह साफतौर पर कहा जाता था कि ये पशु और गाड़ियाँ उसकी अपनी नहीं हैं। विवाद छिड़ने पर, ये दस्तावेज़ न्यायालयों में मान्य होते थे।

नीचे एक ऐसे ही दस्तावेज़ का नमूना दिया गया है जो नवंबर 1873 में एक किसान ने हस्ताक्षरित किया था (यह दक्कन दंगा आयोग के अभिलेखों से उद्धृत है।) :

मैंने आपको देय ऋण के खाते में, आपको अपनी लोहे के धुरों वाली दो गाड़ियाँ, साज-समान और चार बैलों के साथ बेची हैं... मैंने इस दस्तावेज़ के तहत उन्हीं दो गाड़ियों और चार बैलों को आपसे भाड़े पर लिया है। मैं हर माह आपको चार रुपए प्रतिमाह की दर से उनका किराया (भाड़ा) दूँगा और आपसे आपकी अपनी लिखावट में रसीद प्राप्त करूँगा। रसीद न मिलने पर मैं यह दलील नहीं दूँगा कि किराया नहीं चुकाया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्याय का अनुभव

कर्ज़ कैसे बढ़ते गए

दक्कन दंगा आयोग को दी गई अपनी याचिका में एक रैयत ने यह स्पष्ट किया कि ऋणों की प्रणाली कैसे काम करती थी :

एक साहूकार अपने कर्जदार को एक बंधपत्र के आधार पर 100 रु. की रकम 3-2 अन्ना प्रतिशत की मासिक दर पर उधार देता है। कर्ज़ लेने वाला इस रकम को बांड पास होने की तारीख से आठ दिन के भीतर वापस अदा करने का करार करता है। रकम वापस अदा करने के लिए निर्धारित समय के तीन साल बाद साहूकार अपने कर्जदार से मूलधन तथा ब्याज दोनों को मिला कर बनी राशि (मिश्रधन) के लिए एक अन्य बांड उसी ब्याज दर से लिखवा लेता है और उसे संपूर्ण कर्ज़ा चुकाने के लिए 125 दिन की मोहलत दे देता है। तीन साल और 15 दिन बीत जाने पर कर्जदार द्वारा एक तीसरा बांड पास किया जाता... (यह प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है)... 12 वर्ष के अंत में... 1000 रु. की राशि पर उसका कुल ब्याज 2,028 रु. 10 आना 3 पैसे हो जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ब्रिटेन – कपास की आवश्यकता है।

↓

- कपास सौदागर / साहूकार

↓

- भारतीय किसान

(प्रति एकड़ के लिए 100 रूपये अग्रिम राशि दी जाने लगी)

- 1862 में ब्रिटेन में कपास की आपूर्ति का 90 प्रतिशत भाग भारत से जाने लगा।

↓

कपास उत्पादकों को क्या मिला?

ऋण का स्त्रोत सूख गया

भारत 1st → 1865 - निर्यात ↓ → अमेरिका गृहयुद्ध समाप्त

↓

ब्रिटेन ने वहां से ले लिया।

← निर्यात व्यापारी + साहूकारों

समस्या

1. ऋण स्त्रोत सूख

2. 1820 - बंदोबस्त

↓ +30 साल

नया बंदोबस्त

↳ 50-100% ↑



अन्याय का अनुभव

रैयत समुदाय गुस्सा ? ⟶ ऋणदाता वर्ग इतना संवेदनशील क्यों हो गया।



मूल - 100 ₹ अत्याधिक
ब्याज़ - 2000 ₹ ब्याज

↓

यह वर्ग परंपरागत नियमों का भी उल्लंघन कर रहा है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ऋणदाताओं ने शिकायत की अंग्रेजों

↓

1859 - अंग्रेज = परिसीमन कानून



↓

रैयत ऋणपत्र / हस्ताक्षर ऋणदाताओं

↓

तीन वर्ष

ब्याज़ संचय रोका जाए।

साहूकार की चालाकी

- नया बंध पत्र बनता
  ↳ (बकाया राशि + ब्याज) = नया मूल
- जमा की रसीद नहीं देते।
- जाली आकंड़े भरते।
- किसान की फसलें कम कीमत पर खरीदी गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ऋण का स्त्रोत सूख गया :-

- 1865 तक अमेरिका में गृह युद्ध बंद हो गया।
- ↓
- अमेरिका में कपास का उत्पादन फिर से चालू हो गया।
- ↓
- भारतीय कपास के निर्यात में गिरावट आती चली गयी।
- ↓
- व्यापारी और साहूकारों ने कपास उत्पादकों को ऋण देने बंद कर दिये।
- ↓
- सरकार द्वारा लगान भी बढ़ा दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्याय का अनुभव :-

भाड़ा-पत्र

जब किसान पर ऋण का भार बहुत बढ़ गया तो वह ऋणदाता का ऋण चुकाने में असमर्थ हो गया। अब ऋणदाता के पास अपना सर्वस्व-जमीन, गाड़ियाँ, पशुधन देने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन पशुओं के बिना वह आगे खेती कैसे कर सकता था। इसलिए उसने जमीन और पशु भाड़े पर ले लिए। अब उसे उन पशुओं के लिए, जो मूल रूप से उसके अपने ही थे, भाड़ा चुकाना पड़ता था। उसे एक भाड़ा-पत्र (किरायानामा) लिखना पड़ता था जिसमें यह साफतौर पर कहा जाता था कि ये पशु और गाड़ियाँ उसकी अपनी नहीं हैं। विवाद छिड़ने पर, ये दस्तावेज़ न्यायालयों में मान्य होते थे।

नीचे एक ऐसे ही दस्तावेज़ का नमूना दिया गया है जो नवंबर 1873 में एक किसान ने हस्ताक्षरित किया था (यह दक्कन दंगा आयोग के अभिलेखों से उद्धृत है।) :

मैंने आपको देय ऋण के खाते में, आपको अपनी लोहे के धुरों वाली दो गाड़ियाँ, साज-समान और चार बैलों के साथ बेची हैं... मैंने इस दस्तावेज़ के तहत उन्हीं दो गाड़ियों और चार बैलों को आपसे भाड़े पर लिया है। मैं हर माह आपको चार रुपए प्रतिमाह की दर से उनका किराया (भाड़ा) दूँगा और आपसे आपकी अपनी लिखावट में रसीद प्राप्त करुँगा। रसीद न मिलने पर मैं यह दलील नहीं दूँगा कि किराया नहीं चुकाया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अन्याय का अनुभव :-

कर्ज़ कैसे बढ़ते गए

दक्कन दंगा आयोग को दी गई अपनी याचिका में एक रैयत ने यह स्पष्ट किया कि ऋणों की प्रणाली कैसे काम करती थी :

एक साहूकार अपने कर्जदार को एक बंधपत्र के आधार पर 100 रु. की रकम 3-2 अन्ना प्रतिशत की मासिक दर पर उधार देता है। कर्ज़ लेने वाला इस रकम को बांड पास होने की तारीख से आठ दिन के भीतर वापस अदा करने का करार करता है। रकम वापस अदा करने के लिए निर्धारित समय के तीन साल बाद साहूकार अपने कर्जदार से मूलधन तथा ब्याज दोनों को मिला कर बनी राशि (मिश्रधन) के लिए एक अन्य बांड उसी ब्याज दर से लिखवा लेता है और उसे संपूर्ण कर्जा चुकाने के लिए 125 दिन की मोहलत दे देता है। तीन साल और 15 दिन बीत जाने पर कर्जदार द्वारा एक तीसरा बांड पास किया जाता... (यह प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है)... 12 वर्ष के अंत में... 1000 रु. की राशि पर उसका कुल ब्याज 2,028 रु. 10 आना 3 पैसे हो जाता है।

1. ग्रामीण बंगाल के बहुत से इलाकों में जोतदार एक ताकतवर हस्ती क्यों था ?

उत्तर :

कम्पनी

↓

जमींदार

↓

रैयत ⟷ जोतदार – यह अमीर रैयत होते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बंगाल के बहुत से इलाके में जोतदार एक ताकतवर हस्ती निम्नलिखित कारणों से था –

1. जोतदारों के रैयतों से घनिष्ठ संबंध होते थे – जोतदार जमींदारों की तरह जमीनों से दूर शहरों में नहीं बल्कि गांव में रहते थे और इस तरह गांवों के गरीब ग्रामीणों के काफी बड़े वर्ग पर सीधा नियंत्रण रखते थे।
2. जोतदारों ने बड़े-बड़े भूखंडों को प्राप्त कर लिया था–

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. जोतदार अपनी जमीन का बहुत बड़ा भाग बटाइदारों के माध्यम से जुतवाते थे। वे बटाईदार एक तरह से जोतदारों के अधीन होते थे।

4. जोतदारों के इशारे पर रैयत जमींदार का लगान समय पर नहीं जमा करवाते थे–

2. जमींदार लोग अपनी जमींदारी पर किस प्रकार नियंत्रण बनाए रखते थे ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : जमींदार लोग अपनी जमींदारियों पर निम्नलिखित ढंग से नियंत्रण बनाए रखते थे :=

1. फर्जी बिक्री की तकनीक – बर्दवान की कहानी
2. नए जमींदार को जमीन का कब्जा नहीं देते थे– लठैतो की मदद से नए खरीददार के लोगों को मार-पीट कर भगा देते थे।
3. रैयत पुराने जमींदार के प्रति वफादार रहते थे और कई बार तो वे नये जमींदार (खरीददार) के लोगों को जमीन में घुसने ही नहीं देते थे। वे अपने आपको पुराने जमींदार से जुड़ा हुआ महसूस करते थे।

3. पहाड़िया लोगों ने बाहरी लोगों के आगमन पर कैसी प्रतिक्रिया दर्शाई ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : पहाड़ी लोगों को पहाड़िया कहा जाता था, ये राजमहल की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द रहते थे ।

प्रतीक - कुदाल

- झूम खेती करते थे।
- जंगल की उपज से गुजर बसर करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सरकार ने जैसे -जैसे कृषि को बढ़ाया, जंगल सिकुड़ते गए, और मैदानी लोगों व पहाड़िया लोगों के बीच झगड़े बढ़ते गए। मैदानों में रहने वाले जमींदारों को अक्सर इन पहाड़ी मुखियाओं को नियमित रूप से खिराज देकर उनसे शांति खरीदनी पड़ती थी। इसी प्रकार व्यापारी लोग भी इन पहाडियों द्वारा नियंत्रित रास्तों का इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु उन्हें कुछ पथ-कर दिया करते थे।

4. संथालों ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह क्यों किया ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : संथाल लोग मुख्यतः कृषक थे।

संथालों की शक्ति का प्रतीक – हल

संथाल विद्रोह – 1855-56 में हुआ

नेता – सिधू मांझी

संथालों ने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह निम्नलिखित कारणों से किया –

संथाल अपनी खानाबदोश जिंदगी को छोड़ जंगलों के अंदरूनी हिस्सों में एक जगह बस गए और बाजार के लिए कई तरह की वाणिज्यिक फसलों की खेती करने लगे और व्यापारियों तथा साहूकारों के साथ

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लेन देन करने लगे थे। किंतु संथालों ने जल्दी ही समझ लिया कि उन्होंने जिस भूमि पर खेती शुरू की थी, वह उनके हाथों से निकलती जा रही है क्योंकि संथालों ने जिस जमीन को साफ करके खेती शुरू की थी उस पर सरकार भारी कर लगा रही थी साहूकार लोग ऊँची दर पर ब्याज लगा रहे थे और कर्ज अदा न किये जाने की स्थिति में जमीन पर ही कब्जा कर रहे थे। जमींदार लोग भी दामिन-ए-कोह के इलाके पर अपने नियंत्रण का दावा कर रहे थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. संथालों ने जिस जमीन को साफ करके खेती शुरू की थी, उस पर सरकार भारी कर लगा रही थी – (दामिन-ए-कोह)
2. साहूकार लोग बहुत ऊँची दर पर ब्याज लगा रहे थे। कर्ज अदा न करने पर संथालों की जमीन पर कब्जा कर लिया जाता था–
3. संथाल लोग अपने लिए आदर्श संसार का निर्माण करना चाहते थे। जहां उनका अपना शासन हो। अत: वे ऐसा मानते थे कि जमींदारों, साहूकारों तथा औपनिवेशिक राज के विरूद्ध विद्रोह करने का समय आ गया है।

5. दक्कन के रैयत ऋणदाताओं के प्रति क्रुद्ध क्यों थे ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : दक्कन के रैयत ऋणदाताओं के प्रति निम्नलिखित कारणों से क्रुद्ध थे –

1. दक्कन में ऋण का स्त्रोत सूख गया। वहीं दूसरी ओर राजस्व की मांग बढ़ा दी गयी। कंपनी उपज का लगभग 50 प्रतिशत रैयत से लेती थी। रैयत उस हालत में नहीं थी कि बढ़ी हुई मांग पूरी कर सके।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. 1832 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतों में तेजी से गिरावट आई। परिणामस्वरूप किसानों की आय में और भी गिरावट आ गयी। इस दौरान 1832–34 के वर्षों में देहाती इलाके अकाल की चपेट में आकर बर्बाद हो गये। दक्कन का एक तिहाई पशुधन मौत के मुंह में चला गया और आधी मानव जनसंख्या भी काल का ग्रास बन गयी और जो बचे, उनके पास भी उस संकट का सामना करने के लिए खाद्यान्न नहीं था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. कपास के निर्यात में आयी गिरावट के बाद साहूकारों ने ऋण देने से मना कर दिया।

4. साहूकार ब्याज पर ब्याज लगाते जाते थे। (चक्रवर्ती ब्याज)



6. इस्तमरारी बंदोबस्त के बाद बहुत सी जमींदारियां क्यों नीलाम कर दी गयी ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बंगाल के गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में भू-राजस्व वसूली की एक नयी पद्धति प्रचलित की जिसे 'स्थायी बंदोबस्त', 'जमींदारी प्रथा' अथवा 'इस्तमरारी बंदोबस्त' के नाम से जाना जाता है।

लगान स्थायी कर दिया गया था।

जमींदार द्वारा समय पर लगान अदा नहीं किये जाने पर सूर्यास्त कानून के तहत जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इसके अनेक कारण थे –

1. कम्पनी द्वारा निर्धारित प्रारम्भिक राजस्व माँगें अत्यधिक ऊँची थीं।
2. भू–राजस्व की ऊँची माँग का निर्धारण 1790 के दशक में किया गया था इस समय कृषि उत्पादों के मूल्य कम थे।
3. जमींदारों के अनेक विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया था –
4. जमींदार शक्ति के प्रयोग द्वारा राजस्व वसूली नहीं कर सकते थे।
5. रैयत समय पर लगान जमा नहीं करवाते थे।

7. पहाड़िया लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से किस रूप में भिन्न थी ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

- पहाड़िया लोग राजमहल की पहाड़ियों के आस पास रहते थे और जंगल से प्राप्त वस्तुओं से आजीविका चलाते थे।
- संथाल लोग मुख्यतः कृषक थे। ब्रिटिश सरकार ने इन्हें जमीनें देकर राजमहल की पहाड़ियों की तलहटी में बसने के लिए तैयार किया था। जिससे सरकार के राजस्व में वृद्धि की जा सके।
- पहाड़िया लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से कई रूपों में भिन्न थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. पहाड़िया लोग झूम खेती करते थे और जंगल के उत्पादों से अपनी जीविकोपार्जन करते थे। किंतु संथाल स्थायी खेती करते थे।
2. पहाडिया लोग खेती का कार्य मुख्यतः कुदाल के द्वारा करते थे जबकि संथाल हल से खेती करते थे। अपने परिश्रम से उन्होंने चट्टानी भूमि को भी अत्यधिक उपजाऊ बना दिया था।
3. झूम खेती करना, खाद्य संग्रह, काठ कोयला बनाना, रेशम के कीड़े पालना आदि पहाडिया लोगों के मुख्य व्यवसाय थे और खानाबदोश जीवन जीते थे।

4. संथाल स्थायी रूप से एक स्थान पर रहते थे और बढ़िया तम्बाकू और सरसों जैसी वाणिज्यिक फसलें उगाते थे। व्यापारी और साहूकारों के साथ लेन देन भी करते थे।

5. पहाड़िया लोग असभ्य और बर्बर जीवन जीते थे जबकि संथालों का जीवन कुछ सभ्य था।

8. अमेरिकी गृह युद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को कैसे प्रभावित किया ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

- जब 1861 में अमेरिका में गृह युद्ध छिड़ गया तो ब्रिटेन के कपास क्षेत्र में तहलका मच गया। अमेरिका से आने वाली कपास में काफी गिरावट आयी। जो लंकाशायर का मैनचेस्ट के वस्त्र उद्योगों के लिए कच्चा माल था।
- ब्रिटेन में कुल कपास का 3/4 भाग अमेरिका से आता था।
- अमेरिकी गृहयुद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को निम्न तरीके से प्रभावित किया –

1. सरकार ने भारतीय रैयतों को अधिक मात्रा में कपास पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया।
2. सौदागरों को ब्रिटेन की तरफ से अग्रिम राशि उधार दी गयी और सौदागरों ने प्रति एकड़ के हिसाब से 100 रूपये रैयतों को अग्रिम राशि दी जाने लगी।
3. रैयतों के लिए ऋण के स्त्रोत बढ़ गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. भारत में खाद्यान्न उत्पादन में कमी आयी और कपास का उत्पादन बढ़ गया। 1862 तक स्थिति यह आयी कि ब्रिटेन में जितना भी कपास का आयात होता था, उसका 90 प्रतिशत भाग अकेले भारत से जाता था।

5. इस तेजी में भी कपास उत्पादकों को समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकी। कुछ धनी किसानों को तो लाभ अवश्य हुआ लेकिन अधिकांश किसान कर्ज के बोझ से और अधिक दब गए।

6. 1865 में अमेरिका में गृहयुद्ध समाप्त हो गया तो वहां कपास का उत्पादन फिर से चालू हो गया। इससे भारतीय कपास की कीमत व निर्यात दोनों में गिरावट आती चली गयी। जिससे कपास उत्पादक रैयतों को काफी नुकसान हुआ।

7. साहूकारों ने रैयत को ऋण देने से मना कर दिया और सरकार द्वारा भू-राजस्व भी बढ़ा दिया गया।

9. किसानों का इतिहास लिखने में सरकारी स्त्रोतों के उपयोग के बारे में क्या समस्याएं आती हैं ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

1. सरकारी स्त्रोत वास्तविक स्थिति का निष्पक्ष वर्णन नहीं करते। अतः उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों को पूरी तरह सत्य नहीं माना जा सकता।
2. सरकारी स्त्रोत सरकारी दृष्टिकोण एवं अभिप्रायों के पक्षधर होते हैं। वे विभिन्न घटनाओं का विवरण सरकारी दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत करते हैं।
3. सरकारी स्त्रोतों की सहानुभूति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रति ही होती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अत: किसान इतिहास लेखन में सरकारी स्त्रोतों का उपयोग करते हुए कुछ बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए –

1. सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन अत्यधिक सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।
2. सरकारी रिपोर्टों में उपलब्ध साक्ष्य का मिलान समाचार पत्रों, गैर सरकारी विवरणों, वैधिक अभिलेखों आदि में उपलब्ध साक्ष्यों से करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।


mg